'डाक पंजियन सं. Jaipur city/223/2015-17
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 21 अंक 19 19 दिसम्बर, 2017 कुल पृष्ठः 8 एक प्रतिः रुपए 7.00 वार्षिक : रुपए 150/-

'महिलाओं का काम पुरुषों से कठिन'

आप सब के साथ काम करना अच्छा लगता है लेकिन मुश्किल भी है। महिलाओं के लिए अपने पारिवारिक दायित्वों का निर्वहन करते हुए संघ का काम करना मुश्किल है। आपको परिवार के वरिष्ठजनों की आज्ञा से ही काम करना पड़ता है, परिवार की जिम्मेदारियों को प्राथमिकता देनी पड़ती है जबकि पुरुषों के लिए यह इतना कठिन नहीं है। पुरुषों के साथ काम करने की लंबी योजना बनाई जा सकती है लेकिन आप अपनी जिम्मेदारियों के कारण इतनी स्वतंत्र नहीं है। आपकी स्थिति, मानसिकता, क्षमताओं एवं परिस्थितियों का ध्यान रखना पड़ता है लेकिन इसके बावजूद आप काम कर रही है, यह प्रेरणादायी है लेकिन पर्याप्त नहीं है। मांग इससे बहुत अधिक है।

संघ के केन्द्रीय कार्यालय संघशक्ति में विगत 10 से 12 दिसम्बर तक बालिका शिविरों की शिक्षिकाओं के शिविर के विदाई कार्यक्रम को संबोधित करते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने उपर्युक्त बात कही। उन्होंने कहा कि आपको अपने आपको हर परिस्थिति के लिए तैयार करना पड़ेगा। दूषण और आभूषण को मिलाकर यह शरीर बना है इसे हर परिस्थिति के लिए तैयार करना पड़ेगा। पूज्य तनसिंह जी के इस संदेश को समझना पड़ेगा कि यह शरीर मेरा नहीं है, मेरी प्रतिभा मेरी नहीं है।

(शेष पृष्ठ 2 पर)

समारोह पूर्वक मनेगा स्थापना दिवस

21 दिसम्बर की रात्रि सबसे बड़ी रात्रि होती है उसके बाद दिन बड़े होने लगते हैं। सूर्य की ऊर्जा, उष्मा व प्रकाश की मात्रा बढ़ने लगती है। इसी शुभ घड़ी में 22 दिसम्बर को श्री क्षत्रिय युवक संघ का स्थापना दिवस मनाया जाता है। आगामी 22 दिसम्बर को भी संघ का 72वां स्थापना दिवस विभिन्न स्थानों पर समारोह पूर्वक मनाया जाएगा। अभी तक प्राप्त सूचना अनुसार बीकानेर में माननीय संघ प्रमुख श्री के सानिध्य में संभाग स्तरीय कार्यक्रम रखा जाएगा। 25 नवम्बर को इस बाबत बैठक कर रुपरेखा बनाई गई एवं वरिष्ठ स्वयंसेवक भरतसिंह सेरुणा को संयोजन का दायित्व सौंपा गया।

(शेष पृष्ठ 2 पर)

'श्रेय साधन को शाश्वत धर्मपथ अपनाएं'

आज तक का इतिहास बताता है कि इस संसार को हानि से बचाने का काम क्षत्रियों ने किया है और आगे भी इनके द्वारा ही संभव है लेकिन इसके लिए आवश्यक है कि क्षत्रिय अपने पूर्वजों की तरह ही शाश्वत धर्म पथ को अपनाएं। भगवान ने स्वयं इस पथ का वर्णन गीता में उपलब्ध करवाया है एवं श्रेय साधन हेतु साधन क्रम बताया है। इसलिए इस संसार को हानि से बचाने के लिए क्षत्रियों को गीता के साधन क्रम को अपनाना पड़ेगा। अपने फरीदाबाद प्रवास के दौरान स्वामी श्री अड़गड़ानंद जी महाराज ने माननीय संघ प्रमुख श्री से उपरोक्त बात कही। (शेष पृष्ठ 2 पर)

राज समाधान की शुरुआत

विगत सितम्बर में संघ के केन्द्रीय कार्यालय संघशक्ति में समाज के प्रशासनिक अधिकारियों की बैठक हुई थी जिसमें अधिकारियों ने समाज के लोगों की प्रशासन से संबंधित समस्याओं के समाधान हेतु एक वेबसाइट बनाने का निर्णय किया। वह वेबसाइट www.ravsamadhan.org के नाम से बन गई है एवं 8 दिसम्बर को माननीय संघ प्रमुख श्री के सानिध्य में इसकी विधिवत शुरुआत की गई।

(शेष पृष्ठ 2 पर)

'श्रद्धापूर्वक मनाई पूज्य श्री की पुण्यतिथि'

श्री क्षत्रिय युवक संघ के संस्थापक पूज्य श्री तनसिंह जी अपने जीवनकाल में आत्म-प्रचार से सदा दूर रहे। अपनी अद्भुत प्रतिभा को भी उन्होंने धन अथवा प्रसिद्धि प्राप्त करने में प्रयुक्त करने के स्थान पर एक सामाजिक न्यास का स्वरूप दिया। उनका लेखन, उनकी राजनीति, उनका धनार्जन, उनका कुटुम्बपालन, उनका अध्ययन और उनका सर्वस्व केवल अपने ध्येय के निमित्त था। इससे तनसिंह जी के जीवनकाल में उन्हें उनके वास्तविक स्वरूप में केवल उनके ध्येय और मार्ग को आत्मसात करने वाले कुछ विरले साथी ही जान सके। अन्य लोग भी उनकी अद्भुत प्रतिभा से प्रभावित तो होते थे किन्तु उनके ध्येय से निरपेक्ष रहने के कारण उनकी महानता से अपरिचित रहे। 7 दिसम्बर 1979 को तनसिंह जी ने अपनी पार्थिव देह का त्याग कर दिया। किन्तु अपने अनुचरों के लिए वे श्री क्षत्रिय युवक संघ के रूप में सदा साथ ही हैं। तनसिंह जी के अभिनव तप ने उनके देहावसान के पश्चात आश्चर्यजनक गति से

प्रस्फुटित होकर श्री क्षत्रिय युवक संघ को समाज के बड़े हिस्से तक पहुंचाया और संघ निरंतर समाज में अपना सेवाकार्य करता जा रहा है। संघ के प्रसार के साथ ही समाज ने तनसिंह जी को भी उनके वास्तविक स्वरूप में पहचाना और उनकी महानता के प्रति कृतज्ञता अनुभव की। वही कृतज्ञता एवं श्रद्धा संघ को मिलने वाले सहयोग तथा प्रतिवर्ष तनसिंह जी की जयन्ती एवं पुण्यतिथि पर होने वाले कार्यक्रमों के रूप में प्रकट होती है। इस वर्ष भी 7 दिसम्बर को समाज ने तनसिंह जी की 38वीं पुण्यतिथि पर विभिन्न स्थानों पर श्रद्धांजलि कार्यक्रम आयोजित हुए जिनमें समाज ने अपनी कृतज्ञता प्रकट की। कार्यक्रमों के संक्षिप्त समाचार इस प्रकार है।

जयपुर स्थित संघ मुख्यालय 'संघशक्ति भवन' में प्रतिवर्ष की भांति पूज्य श्री की पुण्यतिथि पर आयोजित कार्यक्रम में आदरणीय महावीर सिंह सरवड़ी सहित जयपुर शहर के स्वयंसेवक उपस्थित रहे।

(शेष पृष्ठ 3 पर)

(पृष्ठ एक का शेष)

महिलाओं का...

मेरी काबिलियत मेरी नहीं है बल्कि इसका मालिक समाज है। इसमें से मुझे इतना ही खर्च करना है जितनी मेरी न्यूनतम आवश्यकता है। संघ संस्कार निर्माण का काम करता है लेकिन मूल रूप से यह काम मां का है इसलिए माताओं को संस्कारित करना आवश्यक है और यह काम आपके जिम्मे है। संघ का काम ऐसा है कि इसका परिणाम सदियों बाद प्रकट होगा इसलिए धैर्यपूर्वक कर्मशीलता आवश्यक है। उन्होंने पूज्य तनसिंह जी द्वारा प्रदत्त अष्ट सूत्रों की चर्चा करते हुए उन्हें अपने दैनिक जीवन में अपनाने की बात कही। इससे पूर्व तीन दिन के शिविर में संघ प्रमुख श्री ने शिक्षिकाओं को शिविर संचालन से संबंधित निर्देशों को समझाया। बालिका शिविरों के लिए उपयोगी सहगायनों एवं चर्चा के विषयों को विस्तार से स्पष्ट किया। कुछ सहगायनों का अर्थबोध भी कराया गया। संचालन संबंधी निर्देशों का व्यवहारिक अभ्यास करवाया गया। माननीय संघ प्रमुख श्री ने कहा कि आपको स्वयं को अध्ययन कर अपने नोट्स तैयार करने पड़ेंगे। शिविर में महिला विभाग के प्रभारी जोरावरसिंह भादला एवं वरिष्ठ स्वयंसेवक दीपसिंह बेण्यांकाबास भी उपस्थित रहे।

श्रेय साधन...

माननीय संघ प्रमुख श्री 5 दिसम्बर को फरीदाबाद पधारे एवं 7 दिसम्बर तक स्वामी जी के सानिध्य में मार्गदर्शन प्राप्त किया। स्वामी जी ने इस दौरान दर्शनार्थ आए श्रद्धालुओं को प्रवचन करते हुए कहा कि राजनीति के सूत्र अत्यन्त सूक्ष्म होते हैं। इसमें परिणाम दृष्टिगोचर होते हैं लेकिन योजनाएं सामान्य जन को पता नहीं चलती। यदि शासक त्यागी, संयमी एवं ईश्वरोन्मुख हो तो वह अपनी योजना या परिणामों के प्रति सामान्यजन की प्रतिक्रिया की परवाह किए बिना केवल और केवल राज्य एवं जनता के श्रेय साधन पर अपनी गतिविधियों को केन्द्रित करता है। उन्होंने भगवान राम का उदाहरण देते हुए बताया कि सीता परित्याग उनकी ऐसी ही सूक्ष्य योजना का अंग था जिसे समझने की आवश्यकता है। अपने वनवास काल के समय उन्होंने उस समय के सभी ऋषियों द्वारा शोध किए हुए दिव्यास्त्रों को अर्जित किया लेकिन महर्षि वाल्मिकी ने अपने दिव्यास्त्र नहीं सौंपे। भगवान राम ने सीता परित्याग के बहाने अपनी संतान के माध्यम से वे दिव्यास्त्र राज्य शक्ति के लिए हासिल किए। उन्होंने कहा कि शासन करना तलवार की धार पर चलना होता है। यदि शासक त्यागी, संयमी एवं ईश्वरीय योजना के अनुकूल चलने वाला न हो तो समस्त संपदा पाकर भी दुःखी रहता है और अपनी प्रजा को भी दुःखी रखता है। उन्होंने उदाहरण देते हुए बताया कि नेपोलियन बोनापार्ट जैसा प्रतापी शासक भी अपने अंत समय में समुद्र से घिरा होने के बावजूद दो बूंद पानी के अभाव में प्यासा मर गया इसलिए व्यक्ति को समय रहते शाश्वत धर्म पथ का अवलंबन लेना चाहिए और गीता उसी शाश्वत धर्मपथ का संग्रह है।

राज...

इस वेबसाइट में कोई भी व्यक्ति सरकारी कार्यालयों से संबंधित अपनी समस्या को सरलता से रजिस्टर कर सकता है। समाज के प्रशासनिक अधिकारी उस समस्या से संबंधित अधिकारी से सम्पर्क कर उसका समाधान करवाने का प्रयास करेंगे। समस्या को रजिस्टर करते समय वेबसाइट पर उपलब्ध एक पृष्ठ के फार्म को भरना पड़ेगा। अधिकारियों ने अपने सामाजिक भाव का सकारात्मक उपयोग करने का सराहनीय अवसर उपलब्ध करवाया है।

समारोह पूर्वक...

10 दिसम्बर को प्रचार सामग्री का विमोचन प्रसिद्ध संत स्वामी रामसुखदास जी के निकटतम शिष्य रहे रघुवीर जी महाराज के सानिध्य में किया गया। महाराज श्री ने पूज्य तनसिंह जी के विचाराते हुए कहा कि संस्कारवान क्षत्रिय ही समाज और राष्ट्र को सही दिशा दे सकते हैं। 10 दिसम्बर को संभागीयते हुए कहा कि संस्कारवान क्षत्रिय ही समाज और राष्ट्र को सही दिशा दे सकते हैं। 10 दिसम्बर को संभागीय कार्यालय नारायण निकेतन में महिला शाखा का आयोजन किया गया जिसमें तिलक नगर, इन्द्रा कॉलोनी, सुभाषपुरा, कैलाशपुरी, गांधी कॉलोनी आदि में पीले चावल देकर निमंत्रित करने, बैठकें करने, महिलाओं की रैली आयोजित करने आादि कार्यक्रम तय किए गए। पुरुषों के दल ने भी घर-घर सम्पर्क करना प्रारम्भ कर दिया है। जैसलमेर संभाग के म्याजलार प्रांत में संभाग स्तरीय कार्यक्रम की योजना बनाई गई है एवं प्रचार-प्रसार जारी है। मुंबई की शाखाओं ने विगत वर्ष से बड़े स्तर पर स्थापना दिवस मनाना प्रारम्भ किया है। इसी कड़ी में रविवार होने के कारण 24 दिसम्बर को समारोह आयोजित करने का निर्णय लिया। भायंदर में होने वाले समारोह के लिए मुंबई, भायंदर, कल्याण, ऐरोली, खारघर, कांदीवली, उल्लासनगर आदि शाखाओं ने सम्पर्क के लिए अलग-अलग जिम्मेदारी ली है। शाखाओं के स्वयंसेवक अलग-अलग टोलियां बनाकर व्यक्तिशः सम्पर्क कर रहे हैं एवं अधिकतम लोगों को आमंत्रित कर रहे हैं। तनेराज शाखा मुंबई के स्वयंसेवकों ने स्नेहमिलन आयोजित कर दायित्व विभाजन किया गया। राजस्थान के प्रवासी बंधुओं के अलावा अन्य प्रान्तों के मुंबई में रहने वाले क्षत्रिय बंधुओं से भी सम्पर्क किया जा रहा है। स्थानीय मराठा लोगों को भी आमंत्रित कर रहे हैं।

‘गुरु शिखर से’ (विविध विषयों का कॉलम)

नई दिल्ली और राजस्थान

स्वरूपसिंह झिंझनियाली

दिल्ली भारत वर्ष की अतीत से राजधानी रहती आई है। पृथ्वीराज चौहान जिन्हें भारत का अन्तिम हिन्दू सम्राट कहा जाता है उनके राजकाल के बाद यहां मुस्लिम आक्रांताओं ने राज्य किया, लोदी, के दल का हिस्सा वे तीस हजार मजदूर जो लगभग सभी राजस्थान से आए थे और इसकी भव्य इमारतों में लगा बलूआ एवं संगमरमर पत्थर भी राजस्थान की खानों से गे गों को एक दिन की मजदूरी आठ आने एवं महिलााारत आए तो उन्होंने भारत के पूर्व में स्थित कलकत्ता को अपनी राजधानी बनाया। दिल्ली में ब्रिटिश राज के दौरान तीन बार दिल्ली दरबार का आयोजन किया गया जिसमें भारत भर की समस्त रियासतों के शासक सम्मिलित हुए। यह आयोजन वर्ष 1877, 1908 एवं 1911 में हुए। 1911 में दिल्ली का दरबार सबसे भव्य था। इंग्लैण्ड के राजा किंग जार्ज पंचम एवं उनकी रानी क्वीन मैरी भारत आए। वे समुद्र मार्ग से मुम्बई से भारत मेके दल का हिस्सा वे तीस हजार मजदूर जो लगभग सभी राजस्थान से आए थे और इसकी भव्य इमारतों में लगा बलूआ एवं संगमरमर पत्थर भी राजस्थान की खानों से गे गों को एक दिन की मजदूरी आठ आने एवं महिला1 में नई दिल्ली ने अपनी 100वीं साल गिरह मनाई है। दिल्ली दरबार में नई राजधानी की घोषणा के बाद अब नई एवं सुन्दर राजधानी को बनाने के लिए उसी स्थान को चुना गया जहां किंग्स वे कैम्प (दिल्ली दरबार) लगा था। लेकिन विशेषज्ञों ने इस स्थान को उपयुक्त नहीं समझा। नई राजधानी बनाने के उचित स्थान ढूंढने का कार्य चलता रहा और अन्त में रायसीना हिल्स (पहाड़ी) को सबसे उपयुक्त माना गया। रायसीना हिल्स एवं इसके आसपास का इलाका जयपुर महाराजा का था। जिनसे समझौते के तहत लिया गया। उस समय महाराजा सवाई माधोसिंह द्वितीय जयपुर के राजा था। 1911 से ही नई राजधानी को बनाने का कार्य श्के दल का हिस्सा वे तीस हजार मजदूर जो लगभग सभी राजस्थान से आए थे और इसकी भव्य इमारतों में लगा बलूआ एवं संगमरमर पत्थर भी राजस्थान की खानों से गे गों को एक दिन की मजदूरी आठ आने एवं महिलाके दल का हिस्सा वे तीस हजार मजदूर जो लगभग सभी राजस्थान से आए थे और इसकी भव्य इमारतों में लगा ब निर्माण भी कराना चाहते थे पर वह योजना क्रियान्वित नहीं हो सकी। रायसीना हिल की सबसे ऊंची जगह पर वायस रीगल लॉज (वायसराय हाउस) बनाया गया जो अब भारत का राष्ट्रपति भवन है। यह 350 कमरों एवं बगीचों का भव्य महल है। इसके ईर्द-गिर्द भव्य प्रशासनिक भवन बने जो अब नार्थ ब्लॉक, साउथ ब्लॉक, संसद भवन कहलाते है। प्रथम विश्व युद्ध में शहीद हुए बहादुर सैनिकों की याद में ‘इण्डिया गेट’ बनाया एवं उस पर उनके नाम उत्कीर्ण किए गए। इण्डिया गेट के आसपास भारतीय रजवाड़ों ने अपनी-अपनी रियासतों के नाम से अपने भवन (हाउस) बनवाए। इण्डिया गेट से वायसराय हाऊस तक चौड़ा एवं सुन्दर मार्ग बनाया गया जो राजपथ कहलाता है।

मि. लुटियन की टीम में अधिकतम सीपीडब्लुडी के इंजीनियर विदेशी थे। केवल एक सिक्ख भारतीय थे। कुछ कान्ट्रेक्टर भारतीय थे जिनका काम निर्माण सामग्री एवं मजदूरों का इन्तजाम करना था। असल लुटियन योजना (नई दिल्ली) को अमली जामा पहनाया भारतीय तराशदारों, पत्थरसाजो (के दल का हिस्सा वे तीस हजार मजदूर जो लगभग सभी राजस्थान से आए थे और इसकी भव्य इमारतों में लगा बलूआ एवं संगमरमर पत्थर भी राजस्थान की खान्के दल का हिस्सा वे तीस हजार मजदूर जो लगभग सभी राजस्थान से आए थे और इसकी भव्य इमारतों में लगा बलूआ एवं संगमरमर पत्थर भी राजस्थान की खानों से गया था। मजदूरों में पुरुषों के साथ महिलाएं भी थीं। पुरुषों को एक दिन की मजदूरी आठ आने एवं महिलाओं को छह आने मिलती थी। वे अपने छोटे-छोटे बच्चों के साथ झुग्गियां बनाकर रहते थे। नमक, मिर्च एवं चपातियां खाते तथा कुओं से सींचकर पानी पीते। नई दिल्ली बसाने के मुख्य सहयोगी इन अनाम मजदूरों के उत्सर्ग को सलाम।

नई दिल्ली को सलीके से बसाने वालों की बड़ी फौज में वे (मजदूर) सबसे गरीब थे, लेकिन सबसे ज्यादा मन लगाकर काम भी इन्होंने ही किया था। इस तरह जयपुर के महाराजा द्वारा दी गई जमीन पर भारत की नई राजधानी नई दिल्ली बसाई गई। राजस्थान से गए पत्थर को तराशकर राजस्थानी शिल्पकारों ने एवं अधिकांश राजस्थानी मजदूरों ने मन लगाकर एवं अपना खून-पसीना बहाकर नई दिल्ली को सुंदर रूप दिया। राष्ट्रपति भवन में जयपुर महाराजा द्वारा दी गई जमीन की याद को ताजा रखने के लिए जयपुर टावर (लोह स्तम्भ) बना हुआ है। इस तरह नई दिल्ली के

(पृष्ठ एक का शेष)

बाड़मेर

चौहटन

जोधपुर

श्रद्धापूर्वक... सर्वप्रथम पूज्य श्री की तस्वीर के सामने दीप प्रज्वलित करके तथा पुष्प चढ़ाकर सभी ने श्रद्धांजलि अर्पित की। इसके पश्चात सहगीत एवं अनेक भजन गाकर पूज्य श्री को स्मरण किया। महावीर सिंह के साथ सभी स्वयंसेवकों ने 'प्रभु जी मोरे अवगुण चित्त न धरो' भजन के द्वारा तनसिंह जी के प्रति आत्मनिवेदन किया।

जोधपुर में बीजेएस कॉलोनी में स्थित राजवी पार्क में पुण्यतिथि का कार्यक्रम आयोजित हुआ। केन्द्रीय कार्यकारी प्रेमसिंह रणधा ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि पूज्य श्री तनसिंह जी की समाज के प्रति पीड़ा ने ही श्री क्षत्रिय युवक संघ का स्वरूप लिया जो आज संजीवनी की भूमिका निभा कर समाज में आत्मगौरव और त्याग भावना को पुनः जगाने में संलग्न है। कार्यक्रम को कर्नल किशोर सिंह शेखावत तथा शेरगढ़ प्रान्त प्रमुख चंद्रवीर सिंह ने भी संबोधित किया। पुण्यतिथि कार्यक्रम में जोधपुर शहर के स्वयंसेवक तथा अन्य समाजबंधु बड़ी संख्या में उपस्थित थे। नागौर के मेड़ता में स्थित श्री चारभुजा राजपूत छात्रावास में आयोजित कार्यक्रम केंद्रीय कार्यकारी गजेंद्र सिंह आऊ एवं संभाग प्रमुख शम्भू सिंह आसरवा की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ भूतपूर्व प्रधान भंवरसिंह रोल चांदावता एवं दातार सिंह थांवला ने पूज्य श्री की तस्वीर पर अगरबत्ती व माल्यार्पण के साथ किया। गजेंद्र सिंह ने अपने उद्बोधन में संघ कार्य को ईश्वरीय कार्य बताते हुए सभी से तनसिंह जी द्वारा दिखाए मार्ग पर चलने का आह्वान किया जिससे उनकी कृपा हमें प्राप्त हो सके। वरिष्ठ स्वयंसेवक दिलीप सिंह बच्छवारी, गोटन सरपंच नारायण सिंह, पन्ने सिंह जी पुणयास ने भी पूज्य श्री तनसिंह जी के प्रति अपने विचार व्यक्त किए। नागौर प्रान्त प्रमुख उगम सिंह गोकुल ने कार्यक्रम का संचालन किया।

इसी प्रकार जालोर ग्रामीण प्रान्त के काणदर गांव में आयोजित कार्यक्रम में संभाग प्रमुख अर्जुन सिंह देलदरी उपस्थित रहे। पूज्य श्री की तस्वीर पर पुष्पांजलि अर्पित की गई। अर्जुन सिंह ने पूज्य श्री के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला तथा उनके जीवन से प्रेरणा लेकर समाज की सेवा में जुट जाने का आह्वान किया। जालोर शहर स्थित वीरमदेव राजपूत छात्रावास में आयोजित कार्यक्रम में छात्रावास के छात्रों के साथ ही शहर के राजपूत समाज के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। सभी ने तनसिंह जी के प्रति श्रद्धासुमन अर्पित किए। वीरबहादुर सिंह असाड़ा, कानसिंह बोकड़ा, ईश्वर सिंह सांगाणा आदि ने कार्यक्रम को संबोधित किया। इसी प्रकार जालोर जिले के भीनमाल स्थित गोपाल राजपूत छात्रावास में कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें सुमेर सिंह कालेवा, डूंगर सिंह पुनासा, जनक सिंह जेरण, कालूसिंह, महावीर सिंह कावतरा आदि ने तनसिंह जी के प्रति अपने विचार व्यक्त किए। जालोर जिले में ही सांचोर स्थित बल्लूजी छात्रावास में कार्यक्रम आयोजित हुआ। जिसमें प्रारम्भ में पुष्पांजलि अर्पित की गई। कार्यक्रम में सांचोर-रानीवाड़ा प्रान्त-प्रमुख शक्तिसिंह आशापुरा उपस्थित रहे। सांचोर के ही विरोल गांव में भी श्रद्धांजलि कार्यक्रम रखा गया जिसमें प्रान्त प्रमुख के साथ प्रवीण सिंह सुरावा, देवेंद्र सिंह, चंदन सिंह विरोल, रेवन्त सिंह जाखड़ी, दुर्गसिंह सुरावा सहित सुरावा, विरोल, हरियाली आदि गांवों के सैकड़ों समाजबंधुओं ने भाग लिया। इसी प्रकार सायला में स्थित राजपूत छात्रावास में भी कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें पूज्य श्री की तस्वीर पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन के पश्चात उनके जीवन-आदर्श पर चर्चा हुई। आबूरोड के शान्ति कुंज में भी पुण्यतिथि कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें उपस्थित जनों ने पूज्यश्री की तस्वीर पर पुष्पांजलि अर्पित की। प्रवीण सिंह परावा ने पूज्य श्री के जीवन पर प्रकाश डाला।

बाड़मेर में राजपूत मुक्ति धाम पर स्थित पूज्य श्री तनसिंह जी के स्मारक (छतरी) पर श्रद्धांजलि का कार्यक्रम उनके निर्वाण दिवस के अवसर पर प्रातः 5.30 बजे सम्भाग प्रमुख देवीसिंह माडपुरा की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ जिसमें बाड़मेर शहर प्रांत की शाखाओं के स्वयंसेवक एवं शहर में रहने वाले वरिष्ठ स्वयंसेवकों सहित अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे। चौहटन स्थित भवानी क्षत्रिय बोर्डिंग हाउस में आयोजित पुण्यतिथि कार्यक्रम में प्रान्त प्रमुख उदय सिंह देदूसर ने कहा कि पूज्य तनसिंह जी ने अपने संघर्षपूर्ण जीवन में सामान्य परिवार से होते हुए भी इतने बड़े संगठन की स्थापना की जो आज समाज के लिए मार्गदर्शक की भूमिका निभा रहा है। कृष्णसिंह गोहड़कातला एवं शैतान सिंह तुड़बी ने भी कार्यक्रम को सम्बोधित किया। महेन्द्र सिंह चौहटन, दातार सिंह गंगाला, गेनसिंह हूरोंकातला, महावीर सिंह, श्रवण सिंह, सुरेन्द्र सिंह, मनोहर सिंह सहित अनेकों स्वयंसेवक उपस्थित रहे। बाड़मेर के ही बालोतरा स्थित वीर दुर्गादास राजपूत बोर्डिंग हाउस में आयोजित कार्यक्रम में जसोल रामद्वारा के महाराज संत श्री रघुवीर जी का सान्निध्य प्राप्त हुआ। उन्होंने कहा कि तनसिंह जी स्वयं एक संत ही थे जिन्होंने समाजहित में अपना सर्वस्व अर्पण कर दिया। मंगलाचरण, प्रार्थना एवं पुष्पांजलि के पश्चात वरिष्ठ स्वयंसेवक चंदन सिंह चांदेसरा द्वारा पूज्य श्री तनसिंह जी की जीवनयात्रा पर प्रकाश डाला गया। चांदेसरा सरपंच संजयप्रताप सिंह जी ने भी अपने विचार व्यक्त किए। चांधन प्रान्त में मूलाना गांव में स्थित श्री क्षत्रिय युवक संघ के शाखा मैदान में पूज्यश्री की पुण्यतिथि मनाई गई। कार्यक्रम में चंदन सिंह, मेहताबसिंह, कैलाशसिंह, हम्मीर सिंह मूलाना, स्वरूप सिंह दवाड़ा, खुमाण सिंह हूरों का तला, रूप सिंह, उगमसिंह, गिरधरसिंह, सवाईसिंह, भवानीसिंह, मोहनसिंह सहित अनेक समाजबंधु उपस्थित थे। सभी ने पूज्य श्री के प्रति श्रद्धासुमन अर्पित किए। जैसलमेर स्थित सम्भागीय कार्यालय तनाश्रम में 7 दिसंबर को प्रभात कालीन शाखा में पूज्य श्री तनसिंह जी के निर्वाण दिवस पर आए हुए स्वयंसेवकों ने पूज्य श्री की तस्वीर पर पुष्प अर्पित करके उन्हें नमन किया। तत्पश्चात कार्यालय में श्रमदान कर पूज्य श्री को श्रद्धांजलि दी। इसके अतिरिक्त भूपाल नोबल्स संस्थान (उदयपुर), चिकमंगलूर (कर्नाटक), गोपालसर, खन्दरा चूली, आदि स्थानों पर श्रद्धांजलि कार्यक्रम हुए। मुम्बई, सूरत सहित देश भर की शाखाओं में भी स्वयंसेवकों द्वारा पूज्य श्री को उनकी पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि अर्पित की गई तथा उनके बताए मार्ग पर दृढ़ता पूर्वक चलकर समाज एवं राष्ट्र की सेवा का संकल्प लिया। सोशल मीडिया पर भी व्यापक स्तर पर पूज्य श्री तनसिंह जी की पुण्यतिथि पर उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनकी विभिन्न तस्वीरों, संस्मरणों और उद्धरणों को साझा किया गया।

काणदर (जालोर)

बालोतरा

संघशक्ति (जयपुर)

संपादकीय

युद्ध, प्रेम और भारतीयता

प्रायः यह नारा दिया जाता है कि युद्ध और प्रेम में सब जायज है। यहां नैतिकता-अनैतिकता, सही-गलत, न्याय-अन्याय या उचित-अनुचित कोई महत्त्व नहीं रखता, बस विजय महत्त्व रखती है, जो पाना है उसे प्राप्त करना महत्त्वपूर्ण रहता है इसलिए कहा जाता है कि युद्ध और प्रेम में सब जायज है। इसी वाक्य को आधार बनाकर हजारों लोगों का नरसंहार किया जाता है। इसी वाक्य को आधार बनाकर गैस चेंबर बनाए गए और लोगों को उनमें ठूंसकर घुट-घुट कर मरने को मजबूर किया गया। परमाणु बम गिराए गए, आज भी हवाई हमले होते हैं, गांव-शहर और नगर उजाड़ दिए जाते हैं क्योंकि वे यह मानते हैं कि युद्ध और प्रेम में सब जायज होता है। लेकिन क्या यह भारतीयता है? क्या भारतीयता का प्रतिनिधित्व करने वाले लोगों ने इतिहास में कभी ऐसा किया है? यदि इतिहास में झांक कर देखें तो पाएंगे कि भारत के लिए विजय कभी महत्त्वपूर्ण नहीं रही बल्कि कर्तव्य पालन ही महत्त्वपूर्ण रहा है और इसलिए वे युद्ध व प्रेम में सब जायज है, इस वाक्य के कभी अनुगामी नहीं बने। कर्त्तव्य पालन के लिए यदि भाई को भी मारना पड़ा तो मारा पर विजय हासिल करने या सत्ता प्राप्त करने के लिए किसी सिद्धान्त का सहारा लेकर अनैतिकत कृत्यों को जायज नहीं ठहराया। भारत का प्रेम पाने की नहीं छोड़ने की बात करता रहा है इसलिए यहां प्रेम पाने के लिए नहीं बल्कि प्रेमास्पद के कल्याण के लिए त्याग की उच्चतम सीमाओं को छूने के उदाहरण सामान्य घटनाएं माना जाते रहे हैं। यहां युद्ध में विजय को ठोकर मारकर नैतिकता के उच्च प्रतिमान स्थापित करने के उदाहरण भी बहुतायत में ढूंढ़े जा सकते हैं। इन सब बातों से सिद्ध होता है कि भारत में वर्तमान में प्रचलित यह नारा कि युद्ध और प्रेम में सब जायज है, भारतीयता तो नहीं है। यह भारत की सोच का प्रतिनिधि न होकर पश्चिम की सोच का प्रतिनिधि है और इसीलिए भारत में कभी सामूहिक नरसंहार के हथियार नहीं जुटाए गए लेकिन पश्चिम का पूरा इतिहास इस बात का गवाह है कि वे यह मानते रहे हैं कि युद्ध और प्रेम में सब जायज है। इसीलिए वहां के इतिहास में इस प्रकार की अमानवीय एवं अनैतिक घटनाएं आम रही हैं जिनसे इस वाक्य की पुष्टि होती है। भारत में कभी सब जायज है कि भावना नहीं रही और ना ही भारतीय जनमानस इस बात को स्वीकार करता है। पहले भी नहीं करता था और आजादी के बाद पनपी नई व्यवस्था में भी नहीं करता। पश्चिम में युद्ध या संघर्ष का लक्ष्य सदैव विजय रहा है, सत्ता रहा है और जब से हमारे यहां भी यह लक्ष्य सत्ता बना, विजय बना तब से यह वाक्य आदर्श रूप लेने लगा। जिन-जिन लोगों ने अपना लक्ष्य सत्ता बनाया उन्होंने सत्ता के लिए संघर्ष में सब जायज है इसे अपनाना शुरू किया। मध्यकाल में बाहर से आई बर्बर जातियों ने इसे अपनाया या यूं कहें वे इसे साथ ही लेकर आई थीं। उस काल में उनके निकट संघर्ष में रहने वाले हमारे लोगों में भी यह बीमारी आई। कालांतर में सत्ता का संघर्ष वोटों पर आधारित हुआ और पश्चिम से प्रभावित भारतीय लोगों ने युद्ध और प्रेम में सब जायज है के सिद्धान्त को अपनाया लेकिन इस दौर में भी ऐसे अनेक लोग हुए जिन्होंने नैतिकता के आधार पर इस्तीफा देकर भारतीयता को जीवित रखा। लेकिन आज भारतीयता के नाम पर सत्तासीन हुए लोगों को युद्ध और प्रेम में सब जायज है का नारा लगाते देखते हैं तो आश्चर्य होना स्वाभाविक है। जब भ्रष्टाचार का विरोध कर सत्तासीन हुए लोग भ्रष्टाचारियों को गले लगाते है तो यह नारा पुष्ट होता है। जब शारदा चिट फण्ड घोटाले या दूरसंचार विभाग के तार घोटाले के आरोपियों को माला पहनाकर स्वागत किया जाए और दलील भारतीयता की दी जाए तो आश्चर्य स्वाभाविक है। जब उत्तरप्रदेश चुनावों से पहले तीन तलाक का मुद्दा एवं गुजरात चुनावों से पहले राम मंदिर मुद्दा चर्चा का विषय बनता है तो आश्चर्य स्वाभाविक है। केन्द्रीय जांच एजेंसियों का अपने पूर्ववर्तियों से कही अधिक दुरुपयोग करते हैं तो आश्चर्य स्वाभाविक है। टी.एन. शेषन के समय अपनी स्वायतत्ता को पहचान कर अपनी साख बनाने वाले चुनाव आयोग पर भारतीयता की समर्थक सरकार के इशारे पर काम करने का आरोप लगता है तो आश्चर्य स्वाभाविक है लेकिन इन सब आश्चर्यों के बीच यह भी प्रश्न उठता है कि क्या यह सब आश्चर्य करने की बात है? जिस भारतीयता को वे अपना आदर्श मानते हैं क्या वह उन महाराणा प्रताप की भारतीयता है जो एक मुस्लिम को अपना सेनापति बनाते हैं? क्या उन राणा हमीर की भारतीयता है जो विधर्मी शरणागत की रक्षार्थ अपना सर्वस्व स्वाहा कर देते हैं? क्या उस महाराजा शिवाजी की भारतीयता है जो सत्ता पर स्वतंत्रता को तरजीह देते हैं? क्या उन दुर्गादास की भारतीयता है जो शत्रु की संतान को भी विभिन्न दबावों को अस्वीकार कर पुनः शत्रु को सकुशल सौंप देते हैं? क्या उन महाराज जयसिंह की भारतीयता है जो शिवाजी को दिए वचन की रक्षा में अपने पुत्र के जीवन को दांव पर लगाते हैं? इन सभी प्रश्नों का उत्तर निश्चित रूप से ना में ही आएगा क्योंकि जिस भारतीयता के नाम पर यह सब किया जा रहा है वह यह भारतीयता नहीं बल्कि भारतीयता का प्रक्षेपित संस्करण है जिसका आदर्श भारत में नहीं यूरोप में है। जो इटली और जर्मनी के राष्ट्रवाद को आदर्श मानते हैं, जिनकी नजर में इजरायल राष्ट्रवाद का सिरमौर है। जो अमेरिका में ट्रंप की जीत पर जश्न मनाते हैं और भारतीय राजपूत राजाओं पर सदैव अंगुली उठाते हैं। इसलिए यदि हम भारतीयता के नाम पर समर्थक बने बैठे हैं तो जरा संभल जाएं, भारतीयता तो इनमें भी उतनी ही है जितनी उनमें है जिनका यह विरोध करते हैं। बस वे भारतीयता की माला नहीं जपते और ये भारतीयता की माला जपकर भी वही सब करते हैं जो वे करते हैं।

मेजर शैतनसिंह की प्रतिमा का अनावरण

सुमेरपुर के पंचायत समिति परिसर में विगत 1 दिसम्बर को परमवीर चक्र विजेता एवं भारत चीन युद्ध के नायक मेजर शैतानसिंह की 93वीं जयंती समारोहपूर्वक मनाई गई एवं पंचायत समिति परिसर में स्थापित उनकी मूर्ति का अनावरण किया गया। दिवगंत विकास अधिकारी दशरथ सिंह कंवलाद ने सुमेरपुर पदस्थापन के समय पंचायत समिति कार्यालय के जीर्णोद्धार के साथ इस मूर्ति स्थापना का कार्य प्रारम्भ करवाया था। इस अवसर पर स्व. दशरथसिंह को भी याद किया गया। अनावरण समारोह में पुलिस थाना सुमेरपुर की गारद एवं एनसीसी ट्रुप द्वारा गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया। बालिकाओं द्वारा परम्परागत स्वागत पश्चात् उप प्रधान एवं भाजपा जिलाध्यक्ष करणसिंह नेतरा ने मेजर साहब के जीवन के बारे में बताते हुए कविता पाठ किया। कैप्टिन नरपतसिंह भारुन्दा ने युद्ध विषयक अनुभव साझा किए। उपखण्ड अधिकारी विनोद मल्होत्रा ने वीर माता एवं वीर पत्नी के उद्गारों को राजस्थानी दोहों के रूप में प्रस्तुत किया। पाली डेयरी के अध्यक्ष प्रतापसिंह बिंठिया ने 1962 के युद्ध के समय के माहौल के बारे में जानकारी दी। मेजर साहब के सुपुत्र नरपतसिंह भाटी ने सुमेरपुर पंचायत समिति का आभार प्रकट किया। संचालन ब्लाक प्रारंभिक शिक्षा अधिकारी परबतसिंह खिंदारागांव ने किया।

संविधान समारोह के रूप में मनाई जयंती

समता आंदोलन समिति जयपुर द्वारा विगत 3 दिसम्बर को देश के प्रथम राष्ट्रपति भारत रत्न डॉ. राजेन्द्र प्रसाद की जयंती संविधान समारोह के रूप में मनाई गई। उल्लेखनीय है कि डॉ. राजेन्द्र प्रसाद भारत की संविधान सभा के अध्यक्ष थे एवं उनकी अध्यक्षता में संपूर्ण संविधान को संकलित किया गया। संविधान सभा के अध्यक्ष होने के कारण उनकी जयंती को संविधान समारोह के रूप में मनाया गया। जयपुर के बापूनगर स्थित चित्रगुप्त मंदिर सभागार में न्यायाधीश पानाचंद जैन, पूर्व आई.ए.एस. एस.एस. बिस्सा, समता आंदोलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष नारायण शर्मा, वरिष्ठ अधिवक्ता शोभित तिवाड़ी, कायस्थ महासभा के महामंत्री डॉ. आदित्यनाथ, भागीरथ शर्मा, योगेन्द्रसिंह मेघसर आदि ने इस कार्यक्रम में अपने विचार व्यक्त करते हुए डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को उनके कृतित्व के अनुरूप सम्मान दिए जाने एवं उनके जन्म दिवस को संविधान दिवस के रूप में मनाए जाने की मांग की।

खरी-खरी

वोट निर्धारित करता है कद

आजादी के आंदोलन से पहले के महापुरुषों को तो आधुनिक सत्ताधीश कम ही पसंद करते हैं लेकिन आजादी के आंदोलन के महामानवों का कद भी उनके नाम द्वारा वोट खींचने की शक्ति पर निर्भर करता है। इसीलिए तो संविधान निर्मात्री सभा के अध्यक्ष की अपेक्षा संविधान की प्रारुप समिति के अध्यक्ष को संविधान निर्माता के रूप में पेश किया जाता रहा है। अपने जीवन काल में कांग्रेस और डॉ. अम्बेडकर के बीच विवाद रहे हो भले लेकिन उनकी मृत्यु के पश्चात् कांग्रेस ने उनके नाम को खूब भुनाया और आज भाजपा उनके कांग्रेस से और विशेष रूप से नेहरू जी से विवादों को अपने वोट खींचने के लिए भुनाती है लेकिन उस संविधान निर्मात्री सभा के अध्यक्ष का कोई नाम नहीं लेता। यहां तक की उनके जन्मदिन को भी कायदे से नहीं मनाया जाता क्योंकि उन्होंने अपने आपको अपने जीवन काल में किसी वोट बैंक का अग्रगामी नहीं बनाया बल्कि वे राष्ट्रपति के रूप में संपूर्ण भारत के बने रहे। आश्चर्य की बात है कि नेहरू परिवार को गालियां देने वाले भाजपाई देश के प्रथम गृहमंत्री के नाम पर खूब राजनीति करते हैं लेकिन देश के प्रथम राष्ट्रपति को भूल जाते हैं। कारण खोजने पर पता चलेगा कि राजेन्द्र बाबू की जाति कोई बड़ा वोट बैंक नहीं है इसलिए राजनेताओं को कोई फायदा नजर नहीं आता। उनका त्याग, उनकी सादगी, उनका देशप्रेम, उनकी योग्यता एवं प्रतिभा इनके लिए कोई मायने नहीं रखती, उनका व्यक्तित्व व कृतित्व इनके लिए नगण्य है क्योंकि वह इनके लिए वोट नहीं जुटाता। यह तो एक उदाहरण मात्र है कि किस प्रकार लोकतंत्र में हर आकलन वोट को आधार बनाकर किया जाता है। वोट के आधार पर ही हर जाति, समूह, महापुरुष, क्षेत्र आदि का कद निर्धारित होता है। जिसके नाम से जितनी वोटों की फसल काटी जा सकती है उसका कद उतना ही छोटा या बड़ा निर्धारित होता है और इस आकलन में जिनका कद जिता छोटा होता है वह उतनी ही उपेक्षा का पात्र होता है और जिसका कद जितना बड़ा होता है वह उतना ही महत्त्वपूर्ण बन जाता है। इसीलिए सरदार पटेल की माला जपी जाती है क्योंकि उनके पं. नेहरू से मतभेद को बढ़ा-चढ़ा कर पेश कर वोट बटोरे जा सकते हैं, इसीलिए डॉ. अम्बेडकर राष्ट्रीय नायक बन जाते हैं क्योंकि उनके नाम से थोक में वोटों की फसल काटी जा सकती है।

शिविर सूचना

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान मार्ग आदि
1.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	22.11.2017 से 25.12.2017 तक	नंदु फार्म हाउस, ओबेराय फार्म हाउस के पास, कपास हेरा चौक, महिपालपुर, **नई दिल्ली**। निकटतम मेट्रो शंकर चौक से ऑटो सुविधा।
2.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	23.12.2017 से 25.12.2017 तक	**टाणा**, तह. सिहोर, जिला-भावनगर (गुजरात)।
3.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	23.12.2017 से 25.12.2017 तक	**ढीमा**, जिला-बनासकांठा (गुजरात)।
4.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	23.12.2017 से 25.12.2017 तक	**गांधीनगर** (गुजरात) संपर्क-महावीरसिंह 9978405810.
5.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	23.12.2017 से 25.12.2017 तक	अमरदीप बी.एड. कॉलेज, **पिलवई**, महेसाणा (गुजरात) **सम्पर्क :** अश्विनी सिंह बिलोदरा 99042-92892
6.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	23.12.2017 से 25.12.2017 तक	**डोभाड़ा** (गुजरात)।
7.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	24.12.2017 से 26.12.2017 तक	**सूरत** (गुजरात) संपर्क : दिलीपसिंह गड़ा 9375852588.
8.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	24.12.2017 से 27.12.2017 तक	**मिठड़ाऊ**, जैसलमेर से म्याजलार बस द्वारा पहुंचे।
9.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	24.12.2017 से 27.12.2017 तक	**नाग खजूरी**, जिला मंदसौर (मध्यप्रदेश) संपर्क : महेन्द्रसिंह फतेहगढ़ 09425978051.
10.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	24.12.2017 से 27.12.17 तक	करणी कन्या छात्रावास, गांधी कॉलोनी, **बीकानेर**।
11.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	25.12.2017 से 28.12.2017 तक	जयमल कोट पुष्कर, **अजमेर**।
12.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	25.12.2017 से 28.12.2017 तक	**कोटा**, श्री राजपूत सभा भवन, ओसीएफ-6, सेक्टर-डी श्री नाथपुरम, वीरांगना हाड़ी रानी सर्किल के पास, कोटा **संपर्क :** पिंकु कंवर पत्नी भंवरसिंह 8619927352 लक्ष्मणसिंह बाड़ापिचानोत 9784812312
13.	मा.प्र.शि. (बालक)	25.12.2017 से 31.12.2017 तक	**गड़ियाला (बीकानेर)**, बीकानेर, बज्जू, बाप से बसें उपलब्ध है।
14.	मा.प्र.शि. (बालक)	25.12.2017 से 31.12.2017 तक	**तेना**, जोधपुर-शेरगढ़ बस मार्ग पर स्थित।
15.	मा.प्र.शि. (बालक)	25.12.2017 से 31.12.2017 तक	वीरमदेव राजपूत छात्रावास, **जालोर**।
16.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	27.12.2017 से 30.12.2017 तक	**अयाना**, तह. जावरा, जिला रतलाम (मध्यप्रदेश)।
17.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	27.12.2017 से 30.12.17 तक	राजपूत बोर्डिंग हाऊस, शास्त्रीनगर, **रतलाम** (मध्यप्रदेश) संपर्क : कृष्णेन्द्रसिंह सेजावता 08989897788, ब्रजराजसिंह बेडू 09425356540.
18.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	28.12.2017 से 31.12.2018 तक	**कुलथाना** जिला प्रतापगढ़। सम्पर्क : कुबेरसिंह सेलारपुरा 99280-51478 समुन्द्रसिंह झालो का खेड़ा 99285-54953
19.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	30.12.2017 से 01.01.2018 तक	**मोरचन्द** (गुजरात)।
20.	मा.प्र.शि. (बालक)	31.12.2017 से 06.01.2018 तक	**रोजदा**, जिला-जयपुर

शिविर में आने वाले युवक काला नीकर, सफेद कमीज, काली जूती व युवतियां केसरिया सलवार कमीज, कपड़े के काले जूते, मौसम के अनुसार बिस्तर (एक परिवार से दो जने हों तो अलग-अलग), पेन, डायरी, टॉर्च, रस्सी, चाकू, सूई-डोरा, कंघा, लोटा, थाली, कटोरी, चम्मच, गिलास साथ लेकर आवें। संघ साहित्य के अलावा कोई पत्र-पत्रिका, पुस्तकें एवं बहुमूल्य वस्तुएं साथ ना लावें।

राजेन्द्रसिंह बोबासर, शिविर कार्यालय प्रमुख

भामाशाह निर्माण श्रमिक कल्याण योजना

राजस्थान सरकार के भवन एवं अन्य संनिर्माण श्रमिक कल्याण मंडल द्वारा 1 जनवरी 2016 को भामाशाह निर्माण श्रमिक कल्याण योजना प्रारम्भ की गई है जिसमें वह व्यक्ति, जिसने विगत 12 माह में कम से कम 90 दिन निर्माण श्रमिक के रूप में कार्य किया हो और जिसकी उम्र 18 से 60 वर्ष के बीच हो, हिताधिकारी के रूप में पंजीयन कराने का पात्र है। पंजीयन की प्रक्रिया में आयु प्रमाण-पत्र, निर्माण श्रमिक होने का नियोजक, ठेकेदार, पंजीकृत निर्माण श्रमिक संघ, क्षेत्र के श्रम निरीक्षक या ग्रामसेवक द्वारा दिया गया प्रमाण-पत्र, पासपोर्ट साइज के 3 रंगीन फोटो दस्तावेज के रूप में आवश्यक हैं। इसका आवेदन पत्र श्रम विभाग के अधिकारी, विकास अधिकारी या ग्रामसेवक के पास उपलब्ध रहता है जिसे भरकर किसी भी ई-मित्र केन्द्र पर पंजीकरण करवाया जा सकता है। इसका पंजीयन शुल्क 25 रुपए एवं पांच वर्ष के लिए अंशदान राशि 60 रुपए निर्धारित है। इसमें पंजीकृत निर्माण श्रमिक के लिए निम्न योजनाओं का प्रावधान है।

- **निर्माण श्रमिक शिक्षा व कौशल विकास योजना :** इसमें हिताधिकारी श्रमिक के बच्चों को कक्षा 6 से स्नातकोत्तर तक की शिक्षा, डिप्लोमा, इंजीनियरिंग, मेडिकल आदि प्रोफेशनल शिक्षा के लिए छात्रों को 8 हजार से 23 हजार रुपए एवं छात्राओं व विशेष योग्यजन को 9 हजार से 25 हजार तक की वार्षिक छात्रवृत्ति का प्रावधान है। साथ ही मेधावी छात्र-छात्राओं को कक्षा 8 से स्नातकोत्तर तक 4 हजार से 35 हजार तक की प्रोत्साहन राशि का प्रावधान है।
- **निर्माण श्रमिक सुलभ्य आवास योजना :** इसमें सरकार की आवास योजनाओं में हिताधिकारियों को पात्रतानुसार आवास उपलब्ध करवाने व स्वयं का आवास निर्माण करने के लिए मण्डल द्वारा अधिकतम 1.50 लाख के अंशदान का प्रावधान है।
- **निर्माण श्रमिक स्वास्थ्य बीमा योजना :** हिताधिकारियों को राज्य सरकार की भामाशाह स्वास्थ्य बीमा योजना से लाभान्वित करने का प्रावधान है जिसके तहत स्वयं या परिवार के सदस्यों को सामान्य बीमारियों में 30,000 एवं चिह्नित गंभीर बीमारियों में 3 लाख का निःशुल्क इलाज एम्पैनल अस्पतालों में किया जाता है।
- **निर्माण श्रमिक जीवन व भविष्य सुरक्षा योजना :** हिताधिकारियों को प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना, प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना तथा अटल पेंशन योजना के तहत जमा कराई गई प्रीमियम या अंशदान राशि का 50 से 100 प्रतिशत पुनर्भरण मण्डल द्वारा किया जाता है।
- **शुभ शक्ति योजना :** हिताधिकारी की बालिका व अविवाहित बेटियों को शिक्षा, व्यवसायिक शिक्षा, कौशल विकास, स्वयं का उद्यम शुरू करने या स्वयं का विवाह करने हेतु 55000 रुपए प्रोत्साहन राशि देने का प्रावधान है।
- सामान्य मृत्यु, दुर्घटना मृत्यु या घायल होने पर 5 लाख से 20 हजार तक की सहायता राशि का प्रावधान है।
- **प्रसूति सहायता योजना :** महिला हिताधिकारी को पुत्र के जन्म पर 20 हजार व पुत्री के जन्म पर 21 हजार प्रसूति सहायता का प्रावधान है।

विस्तृत जानकारी ग्रामसेवक, श्रम विभाग के कार्यालय या ई-मित्र से हासिल की जा सकती है।

- मनोहर सिंह धवला

'मन बोले'

मन बोले यह भी करूं, माथे मुकुट धरूं।
प्रजा में राजा बन मैं, जनहित रा कर्म करूं।।
मन बोले यह भी करूं, तन पर पांखे धरूं।
उड़ चलूं नील गगन में, होड़ पक्षी से करूं।।
मन बोले यह भी करूं, पांव धरती न धरूं।
आज इधर कल उधर चलूं, स्वागत बजे डमरू।।
मन बोले यह भी करूं, महलों माया धरूं।
नित पुष्पों की सेज सजे, वहां मैं शयन करूं।।
मन बोले यह भी करूं, घर में पैसा भरूं।
घर आगे कार लग्जरी, बैठकर सैर करूं।।
मन बोले यह भी करूं, काम समाज का करूं।
मग बताया पुरखों ने जो, उस पर डग भरूं।।
मन बोले यह भी करूं, जन जन 'र' मन उतरूं।
मेरा ही डंका बजे धरती पर, अर मैं अमर रहूं।।
मन बोले यह भी करूं, पल में प्रेमचंद बनूं।
कलम धरे कविता करूं, जनता में जोश भरूं।।
मन रुका, वह बोल उठा, भोला सुन रे गफरू।
करना जो वह और है, समय है कर ले शुरू।।

मगनसिंह राजमथाई

एकलव्य का अंगूठा-2

स्व. सांसद फूलनदेवी द्वारा नई दिल्ली के एक कक्ष में 'एकलव्य सेना' के गठन के अवसर पर सोमवार, दिनांक 6 फरवरी 1995 को स्वामी अड़गड़ानंद जी द्वारा उनकी जिज्ञासा पर दिया गया प्रवचन 'एकलव्य का अंगूठा' नामक छोटी पुस्तिका में संकलित है उसे यहां धारावाहिक रूप में प्रकाशित किया जा रहा है -

आचार्य शुक्र : अब शुक्राचार्य जी के कृत्यों पर दृष्टि डालें। इन्होंने यहां तक आविष्कार किया कि अपने असुर शिष्यों के लिए संजीवनी विद्या प्राप्त कर ली। जितने असुरों का प्राणान्त होता, इस विद्या के प्रभाव से वे पुनर्जीवित हो जाते थे। उनके दो पुत्र प्रहलाद के टकराव में समाप्त हो गए थे किन्तु उन्हें एक कन्या थी-देवयानी! उन दिनों महाराज वृषपर्वा असुर राजा थे। उनकी एकमात्र कन्या शर्मिष्ठा थी। राजकन्या वन भ्रमण के लिए निकली। उसके साथ दासियां तथा आचार्य कन्या देवयानी भी थी। उसने जलविहार के उपरान्त भूल से राजकुमारी के वस्त्र पहन लिए। इस पर राजकुमारी ने उसे बड़ी खरी-खोटी सुनाई। उसने कहा, 'तू मेरे पिता की स्तुति करने वाले, उनसे नित्य भीख मांगने वाले और दान लेने वाले की बेटी है। तेरा इतना दुस्साहस कि मेरे राजसी वस्त्रों को पहने।' देवयानी ने कहा, 'इनके पिता हमारे पिताजी के चरण छूते हैं, मैं आचार्य कन्या हूं, राजकन्या क्या है मेरे सामने?' अब बच्चों की शरारत! शर्मिष्ठा ने कहा, 'इसे कुएं में फेंक दो।' जंगल में एक कुआं था, दासियों ने देवयानी को उस कूप में गिरा दिया। देवयानी कई दिनों तक उस कूप में पड़ी रही। उसे मृत्यु आसन्न प्रतीत हुई। अकस्मात् राजा ययाति आखेट करते उधर से घूमते निकले। कुएं से प्राणरक्षा की आवाज आई। राजा ने रस्सी डाली। जब वह लगभग ऊपर आ गई तो राजा ने हाथ पकड़कर उसे कुएं से निकलने में सहायता की। प्रकृतस्थ होने पर उसने कहा, 'इस जंगल में मैं कहां जाऊंगी? आपने मेरी प्राणरक्षा की है इसलिए इस शरीर पर अब आपका अधिकार है। आपने मेरा हाथ पकड़ा है इसलिए मेरा वरण कर मुझे अपने साथ ले चलें।'

ययाति ने कहा, 'अभी तो बचाओ! बचाओ! कह रही थी, अब बाहर आते ही ब्याह करने लगी। कौन हो तुम?' उसने कहा 'मैं दैत्यगुरु शुक्राचार्य जी की कन्या हूं।' राजा उनका अप्रतिम पराक्रम जानते थे। कहीं वे नाराज न हो जाएं? अतः वे बोले, 'देखो, ब्याह के लिए माता-पिता की सहमति आवश्यक होती है। पहले आप अपने पिताजी की अनुमति लें तत्पश्चात् जो उचित होगा हो जाएगा।' देवयानी ने विलाप सहित समस्त वृतान्त अपने पिताजी को कह सुनाया। अंततोगत्वा उसने अपना मंतव्य बताया कि शर्मिष्ठा से बदला लूंगी। इस राजा के साथ मेरा विवाह कर दीजिए और शर्मिष्ठा को मेरी दासी बनाकर मेरे साथ भेजिए। वह कहती थी तू भिखारी की कन्या है, आप भिखारी हैं या गुरु? आचार्य? शुक्राचार्य बोले, 'भिक्षु भी हूं, आचार्य भी हूं। दोनों बातें सही हैं। शर्मिष्ठा अबोध है उसे दासी बनाने का हठ छोड़ दे।' किन्तु देवयानी मचल गई। शुक्राचार्य जी क्षुब्ध हो गए। सन्तान के मोह में आ गए।

सम्राट से उन्होंने कहा, 'राजन् मैं तुम्हारे आचार्य पद का परित्याग कर तपस्या हेतु हिमालय जा रहा हूं। देवयानी पर प्राणघातक प्रहार हुआ है। वह मुझे प्राणों से भी प्रिय है। उसके बिना मैं यहां नहीं रह सकूंगा। जिस शर्मिष्ठा ने ऐसा किया है उसे देवयानी की दासी बना दो तभी मैं यहां रह सकता हूं।' महाराज वृषपर्वा ने सोचा, जो असुर युद्ध में मारे जाते हैं उन्हें यह जीवन प्रदान करते हैं। यदि यह चले जाएंगे तो हम कम पड़ते जाएंगे। देवताओं से संग्राम अवश्यम्भावी है। मुझ समेत सभी असुरगण उनके अधिकार में आ जाएंगे। यदि परिवार का विनाश एक सदस्य के त्याग से रुकता हो तो उस एक सदस्य का परित्याग श्रेयतर है। गांव का नाश समुपस्थित होने पर एक परिवार का त्याग उचित है तथा देश की रक्षा में एक गांव का त्याग कर देना चाहिए। नीति यही कहती है। अस्तु, अपने हृदय को कठोर कर महाराज वृषपर्वा ने प्राणों के समान प्यारी अपनी इकलौती कन्या शर्मिष्ठा को देवयानी की दासी बनाकर भेज दिया। आचार्य ने एक सम्मानित सम्राट की मर्यादा ले ली। सन्तान-मोह, जीविका-मोह तथा यश-प्रतिष्ठा के लिए वह कुछ भी कर सकते हैं।

राजमहल में देवयानी चिन्ता में पड़ गई- यह राजकन्या है, रूपसी है, इसमें अनेक गुण है। राजा की दृष्टि पड़ी तो इस पर अवश्य कृपालु होंगे। ऐसा कुछ करूं कि इस पर राजा की दृष्टि ही न पड़े। वह बोली, 'देख दासी! जंगल में जो महल है वहीं जाओ, महल की सफाई करो, झाड़ू लगाओ और वहीं रहो।' शिकार खेलते महाराजा ययाति उधर से निकले। उन्होंने देखा, महल के ऊपर एक अतीव रूप-स्वरूप सम्पन्न देवी खड़ी है। राजा उसके समीप जाकर बोले, 'देवी! आप कोई देवकन्या हैं, अप्सरा हैं या गंधर्व हैं? इस बियावान जंगल में आप अकेली कैसे हैं?' शर्मिष्ठा ने बताया, 'राजन् मैं महाराज वृषपर्वा की कन्या शमिष्ठा हूं। आपकी महारानी जी के साथ दासी बनकर आई हूं। इस महल में झाड़ू लगाने की सेवा मुझे मिली है।' राजा ने कहा, 'आप और दासी! हमसे अनजाने में अपराध हुआ। मैंने पहले जांच क्यों नहीं किया?' तुरन्त हीरे की अंगूठी पहनाकर राजा ने उससे गन्धर्व विवाह कर लिया, उसे महारानी का सम्मान दिया। क्रमशः उससे तीन पुत्र हुए। देवयानी को भी दो पुत्र हुए।

एक दिन देवयानी ने महारानी जैसी व्यवस्था में बच्चों के साथ खुशहाल शर्मिष्ठा को देखा। बच्चों की मुखाकृति देखते ही वह सारी बात समझ गई। वह तैश में आ गई। उसने सीधे जाकर अपने पिता शुक्राचार्य से शिकायत की, 'इस राजा ने मेरी बड़ी बेइज्जती की। मैं जिसे दासी बनाकर जूतियों के तले रखना चाहती थी, इसने उसे मुकुट में सजा लिया। इसे आप दण्ड दें।' ययाति भी वहां आ गए। शुक्राचार्य ने पुत्री के मोह में कहा, 'हूं! तुम्हें अपनी जवानी का बड़ा नशा है! जाओ अतिवृद्ध हो जाओ।' ययाति उठना चाह कर भी उठ न सके। किसी तरह सरक कर एक डंडा पकड़ा, उठ खड़े हुए! मुस्कराते हुए उन्होंने कहा, 'बाबाजी! आपने तो अपनी कन्या को ही प्रकारान्तर से शाप दे डाला। अब यह बैठकर पंखा डुलाती रहे। वैधव्य भी आसन्न प्रतीत होता है।' देवायानी भी मचल पड़ी, 'पिताजी! आपने यह कैसा शाप दे दिया। कोई हल्की-सी सजा देनी चाहिए थी, उन्हें पूर्ववत् ठीक कर दें।' शुक्राचार्य जी बोले, 'ठीक तो मैं नहीं कर सकता। हां, एक उपाय है। इनका कोई पुत्र इन्हें अपनी जवानी देकर इनका बुढ़ापा ले सकता है।' देवयानी के लड़के वहीं घूम ही रहे थे। उनकी ननिहाल जो ठहरी। उन्होंने सुना तो बोले, 'हम इनकी अवस्था में आना नहीं चाहते। इनकी आंखें कैसी लग रही हैं? चेहरे पर झुर्रियां पड़ी हैं। ऐसे शरीर से हम घोड़े पर कैसे चढ़ेंगे। ऐसी बुढ़ौती आप अपने पास ही रखिए।'

देवयानी के पुत्रों यदु और तुर्वसु से निराश ययाति ने शर्मिष्ठा के पुत्र द्रुह्यु एवं अनु से उनकी युवावस्था लेने का प्रस्ताव किया, उन्होंने भी वृद्धावस्था के दोष गिनाकर अपनी युवावस्था के बदले उसे लेना अस्वीकार कर दिया। अन्ततः शर्मिष्ठा के तृतीय पुत्र पुरु ने कहा, 'पिताजी! आपके आदेश का मैं पालन करूंगा। इस नश्वर शरीर को एक दिन नष्ट होना ही था। माता-पिता की सेवा में यह काम आया, अतः मेरे जैसा भाग्यवान संसार में कौन हो सकता है।' उसने तुरन्त अपनी जवानी देने का संकल्प कर दिया। ययाति की जरावस्था को उसने अंगीकार कर लिया और प्रसन्नता के साथ भजन में लग गया। कुछ काल उपरान्त नहुष पुत्र महाराज ययाति को बड़ी ग्लानि हुई। उन्होंने देखा कि इन विषयों से तृप्ति ही नहीं होती। हमने अपने आज्ञाकारी पुत्र के साथ घोर अन्याय किया है। उन्होंने पुरु की युवावस्था उसे वापस कर अपनी वृद्धावस्था ले ली। देवयानी और शर्मिष्ठा सहित वे जंगल में तप करने चले गए। उतने समय में देवयानी और शर्मिष्ठा में स्नेहिल, सौहार्द्र लौट आया, बचपन की अन्तरंगता जो थी। इस प्रकार संतान-मोह के वशीभूत ये आचार्य कुछ भी कर सकते हैं। जिस यजमान ने सदैव सम्मान दिया, उसकी मर्यादा ले सकते हैं। यजमान मोह में जितना व्यस्त है उतना ही यह भी हो सकते हैं। अंगूठा मर्यादा से बड़ा तो नहीं होता?

आचार्य द्रोण : द्वापर की घटना है। एक बार भारद्वाज पुत्र ऋषि द्रोण ने देखा कि उनके पुत्र अश्वत्थामा के मुख पर सफेद-सफेद कुछ लगाया गया है। अपनी पत्नी कृपी से उन्होंने पूछा, 'यह क्या लगा रखा है?' उन्होंने कहा, 'यह दूध के लिए हठ कर रहा था अतः चावल पीसकर पिलाया है, कुछ मुख में लगा रहने दिया है जिससे बच्चों में यह कह सके कि हमने दूध पीया है।' द्रोण स्तब्ध रह गए। मर्माहत होकर उन्होंने कहा, 'धिक्कार है ऐसे पिता को जो अपने पुत्र के लिए पाव भर दूध की व्यवस्था तक नहीं कर सकता। किन्तु तुम चिन्ता न करो। मैं अभी व्यवस्था करता हूं। द्रुपद मेरा बाल-सखा है वह अब पांचाल नरेश हो गया है। मैं उससे गाय ले आता हूं।'

सहपाठी होने के जोश में द्रोण धड़ल्ले से पांचाल नरेश द्रुपद के पास पहुंचे। बड़े-बड़े राजा-महाराजा उसके अभिषेक में आए थे। द्रोण ने कहा, 'मित्र! तुम्हें राज सिंहासन पर देख मुझे अपार हर्ष हुआ। मित्र! एक गाय मुझे दे दो।' पांचाल नरेश ने उनका तिरस्कार करते हुए कहा, 'देखो, मित्रता और शत्रुता बराबर हैसियत वालों में होती है। कहां मैं मूर्धाभिषिक्त नरेश, कहां तू भिखारी! भिखारी और नरेश की मित्रता कभी सुनी है तूने?' द्रोण ने कहा, 'जब हम गुरुकुल में पढ़ते थे हमने परस्पर मित्रता का वचन दिया था।' द्रुपद ने कहा, 'बचकानी हरकते भूल जाओ द्रोण! तुम अब सयाने हो गए हो और मैं भी! हां, तुम ब्राह्मण भिक्षु बनकर मांगते तो मैं तुम्हें पचासों गायें दे देता किन्तु मित्रता के नाम पर तो एक भी गाय नहीं दूंगा।' द्रोण बहुत तिलमिलाए अन्ततः दुःखी होकर हस्तिनापुर की ओर बढ़ गए।

खेल-खेल में पाण्डव-कौरव बच्चों की गेंद कुएं में गिर गई थी। द्रोण ने तुरन्त सरकण्डे मंगाए, एक को दूसरे में बींधकर उन्होंने गेंद बाहर निकाल दी। उन्होंने बच्चों से कहा, 'साधारण सी गेंद की रक्षा नहीं कर सकते। इस राज्य की रक्षा कैसे करोगे?' बच्चों ने उनका परिचय पूछा। उन्होंने कहा, 'इस घटना की चर्चा पितामह भीष्म से करना, वे मेरा परिचय जानते हैं।' बच्चों ने पितामह से कहा। वह भी उन्हीं गुरु के शिष्य थे जिनसे द्रोण ने यह कला अर्जित की थी। वह समझ गए, हो न हो कदाचित् द्रोण आए हो। उन्होंने द्रोण का स्वागत किया। गाय भेंट की। रहने के लिए राजप्रसाद, चढ़ने के लिए रथ अर्पित किया। बच्चों की उच्च शिक्षा के लिए उन्होंने द्रोण को आचार्य पद पर अभिषिक्त कर दिया। जीविका की पुष्कल व्यवस्था हो गई।

द्रोण बड़ी गरीबी से गुजरे थे। राजकुमारों के आचार्य पद पर प्रतिष्ठित होने पर मनोयोग से शिक्षा देने लगे। शिक्षा के समापन पर उन्होंने बच्चों की परीक्षा ली, जिसमें अर्जुन को संसार का सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर घोषित किया गया। समारोह सम्पन्न होने पर कुछ छात्र आचार्य के साथ वन-भ्रमण के लिए निकल गए। उनके आगे-आगे एक कुत्ता भी जा रहा था। समीप ही निषादराज हिरण्यधनु का पुत्र एकलव्य धनुर्वेद का अभ्यास कर रहा था जिसे कभी आचार्य द्रोण ने निषाद संस्कृति का जानकर, कौरवों का हित देखते हुए धनुर्विद्या में शिष्य बनाने से इनकार कर दिया था। कुत्ता बहुत दिनों से स्नान न किए हुए तथा मलिन चीथड़ों से आवेष्ठित उस अपरिचित श्यामल युवक को देख भूंकने लगा। अभ्यास में बाधक कुत्ते को एकलव्य ने इस कौशल से बाण मारा कि उसकी जिह्वा उलट कर तालू में चली गई। वह खेचरी मुद्रा करने लगा। एकलव्य ने उल्टा-सीधा दो-चार बाण इस तरह मारा कि रक्त की एक बूंद नहीं निकली और भूंकना बंद।

सायं-सायं करता वह कुत्ता अपने स्वामी के पास पहुंचा। युधिष्ठिर ने कहा, 'गुरुदेव! यह कला तो आपने अर्जुन को नहीं सिखाई। यह धनुर्धर अर्जुन से श्रेष्ठ प्रतीत होता है।' आचार्य ने कहा, 'चलो, देखते हैं कौन है?' एकलव्य ने द्रोण को देखा, सादर नमन किया। द्रोण ने पूछा, 'वत्स! तुम कौन हो? यह कला तुम्हें किसने सिखायी?' एकलव्य ने अपना परिचय बताते हुए कहा कि इस कला का श्रेय आपको है। चकित द्रोण ने कहा, 'किन्तु हमने तो तुम्हें कभी अभ्यास नहीं कराया?' एकलव्य ने द्रोण की मूर्ति की ओर इंगित कर कहा, 'इन्हें प्रणाम करता हूं और अभ्यास करता हूं। पेड़ों पर चढ़कर देख लेता हूं कि आप कैसे सिखाते हैं, वैसे ही वैसे मैं अभ्यास किया करता हूं।' निषाद संस्कृति को हस्तिनापुर का विरोधी तथा अर्जुन से भी श्रेष्ठ धनुर्धर होने को अपनी गरिमा तथा जीविका के लिए खतरा भांपकर द्रोण बोले, 'वत्स! गुरुदक्षिणा नहीं दोगे?' एकलव्य ने सोल्लास कहा, 'गुरुदेव! आप आदेश तो करें!' द्रोण ने कहा, 'अपने दाहिने हाथ का अंगूठा दे दो।'

आधुनिक शिष्य होते तो कहते, 'मूर्ति ने पढ़ाया है, मूर्ति मांगेगी तो देंगे।' किन्तु उस गुरुभक्त एकलव्य ने अंगूठा काटकर आचार्य द्रोण को समर्पित कर दिया। यद्यपि द्रोण ने दूसरी उंगलियों से उसे बाण चलाने का निर्देश दिया किन्तु वह निपुणता कहां से आती? निःसंदेह अपनी प्रतिष्ठा खतरे में देख महान भूल हुई। अर्जुन तो सर्वोपरि रहता ही। वह द्रोण की शिक्षा तक ही सीमित नहीं था। भगवान् शंकर से उसने पाशुपत अस्त्र प्राप्त किया था, जो न द्रोण के पास था, न परशुराम के पास। वह देवलोक गया था जहां देवताओं से शास्त्रास्त्रों की शिक्षा उसने ली थी। अर्जुन के लिए तो द्रोण का आशीर्वाद ही पर्याप्त था, वह सदैव सर्वश्रेष्ठ रहता किन्तु जीविका की घबराहट में उन्होंने ऐसा मांग लिया। यह उनकी विवशता थी, परिस्थितिजन्य निर्णय था न कि जातिवाद। जातिवाद उस जमाने में था ही नहीं। सम्राट होते थे, शेष उनके प्रजाजन और प्रजाजनों में करोड़ व्यवसाय थे। जाति-पांत जैसी कोई बात नहीं थी।

(शेष अगले अंक में)

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha,
Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

शाखा के मैदान से

बालोतरा स्थित वीर दुर्गादास राजपूत छात्रावास में लगने वाली दैनिक शाखा का दृश्य।

बेलवा राणाजी में स्नेहमिलन

जोधपुर संभाग के शेरगढ़ प्रांत में पंचायत वार स्नेहमिलन की कड़ी में 10 दिसम्बर को बेलवा राणाजी में स्नेहमिलन रखा गया जिसमें आसपास के गांवों के समाज बंधु भी उपस्थित हुए। सांघिक परम्परानुसार प्रारम्भ हुए स्नेहमिलन को संबोधित करते हुए प्रांत प्रमुख चन्द्रवीरसिंह भाळू ने कहा कि समाज के हर व्यक्ति में सामाजिक भाव है लेकिन उसे उचित दिशा दिए जाने की आवश्यकता है। हमारा इतिहास उज्जवल होने के बावजूद हमारी यह स्थिति क्यों बनी इसी बात का पूज्य तनसिंह जी ने चिंतन किया और उसी चिंतन से उपजे संकल्प का साकर रूप है श्री क्षत्रिय युवक संघ। उन्होंने संकल्प किया कि जो करणीय है उसे कोई न करे तो भी मैं करूंगा क्योंकि यह मेरा काम है। आज ऐसे ही संकल्प को जागृत करने का काम संघ कर रहा है। उनके संकल्प को घर-घर में पहुंचा रहा है।

कर्नल नारायणसिंह बेलवा ने कहा कि आज का भारत युवा देश है। 65 प्रतिशत आबादी 35 वर्ष से कम की है इसलिए अवसरों को पहचानने की आवश्यकता है, दायित्व का बोध किए जाने की आवश्यकता है अन्यथा आज का युवा देश 30 वर्ष बाद वृद्ध राष्ट्र होगा और उस समय के शेष युवकों पर बोझ बन जाएगा। इसलिए स्वयं को समय के साथ अद्यतन करने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि व्यक्तित्व निर्माण एक दिन का विषय नहीं बल्कि सतत् चलने वाली प्रक्रिया है। जीवन में संतुलन आवश्यक है जिससे हर पक्ष का विकास हो सके। उन्होंने युवाओं से कहा कि जानकारी अनुभव का विकल्प नहीं हो सकती इसलिए अनुभवी बुजुर्गों से मार्गदर्शन लेना चाहिए। पूर्व प्रधान भंवरसिंह ने कहा कि संघ बताने का विषय नहीं बल्कि अनुभव का विषय है इसलिए उसको बताने जाए तो कोई न कोई पक्ष अनुछुआ ही रहेगा। खेतसिंह बेलवा ने स्वयं के अनुभव बताए।

अंत में बताया गया कि जिस प्रकार आज का युवा उत्तरदायित्व बोध के अभाव में भविष्य के युवा पर बोझ बनेगा उसी प्रकार हमारा समाज भी उपयोगिता के अभाव में शेष समाज पर बोझ बना और परिणाम स्वरूप अपने स्थान से च्युत हुआ। सनातन मूल्यों के अभाव में सभी प्राप्तियां अपने मूल्य खो देती है इसलिए संघ स्वतंत्रता, स्वाभिमान, त्याग आदि सनातन मूल्यों का अभ्यास करवाता है। संघ काल सापेक्ष उन्नति की उपेक्षा नहीं करता लेकिन यह उन्नति तब ही उपयोगी हो सकती है जब वह समाज सापेक्ष बने। संघ भूत की तरह कमाने और देवताओं की तरह उपयोग करने की बात करता है। हमारे सामने आज की चर्चा में जो प्रश्न उभरे हैं वैसे तनसिंह जी के समक्ष भी उभरे थे लेकिन उन्होंने उन प्रश्नों का उत्तर खोजना प्रारम्भ किया और हम सबको एक मार्ग प्रदान कर गए। स्नेहमिलन का संचालन भैरोंसिंह बेलवा ने किया। उत्तमसिंह गोपालसर, नेतसिंह व उम्मेदसिंह हड़वतनगर ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

छतरसिंह देवंदी को पुत्र शोक

लोकेन्द्रसिंह

संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक **छतरसिंह देवंदी** के छोटे पुत्र **लोकेन्द्रसिंह** का 7 दिसम्बर को लंबी बीमारी के बाद देहांत हो गया। पथ प्रेरक परिवार दिवंगत आत्मा की शांति के लिए परमात्मा से प्रार्थना करता है एवं शोक संतप्त परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

खुमाणसिंह दुदिया को मातृशोक

संघ के स्वयंसेवक **खुमाणसिंह दूदिया** (जोधपुर) की माताजी **श्रीमती रामकंवर** का 18 नवम्बर को देहावसान हो गया। दो पुत्रों एवं तीन पुत्रियों के भरे पूरे परिवार को छोड़कर गई श्रीमती रामकंवर विगत चार माह से बीमार थी। पथप्रेरक परिवार शोक संतप्त परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है एवं दिवंगत आत्मा की शांति के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करता है।

इन्दरसिंह लाखाऊ को पुत्र शोक

सुमेरसिंह लाखाऊ

संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक **इन्दरसिंह लाखाऊ** के पुत्र **सुमेरसिंह लाखाऊ** का विगत 9 दिसम्बर को देहावसान हो गया। वे लंबे समय से कैंसर से पीड़ित थे। विगत माह ही इन्दरसिंह जी के जंवाई जगदंबेपाल सिंह का देहांत हुआ था। भगवान शोक संतप्त परिवार को इस आघात को सहने की क्षमता प्रदान करे।

मंगलसिंह डाबली नहीं रहे

मंगलसिंह डाबली

संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक **मंगलसिंह डाबली** का 13 दिसम्बर को देहावसान हो गया। संवत् 1992 में पाकिस्तान के छोळ परगने के परची की बेरी गांव में जन्मे मंगलसिंह सोढ़ा अपनी माताजी के देहांत के कारण बचपन में ही अपने ननिहाल चांदेसरा (बाड़मेर) आ गए। मल्लीनाथ छात्रावास में रहकर अध्ययन के दौरान संघ के सम्पर्क में आए। राजकीय सेवा में रेवेन्यु इंस्पेक्टर के पद से 1998 में सेवानिवृत होकर सम्पूर्ण रूप से सामाजिक कार्यों में सक्रिय हुए। नागणेची मंदिर नागाणा में व्यवस्थापक के रूप में उत्कृष्ट सेवाएं दी। संघ कार्यालय तनाश्रय (बाड़मेर) में रहकर सेवाएं दी। भवानी क्षत्रिय बोर्डिंग चौहटन के भूमि आवंटन आदि कार्यों में अग्रणी भूमिका निभाई। बालिका छात्रावास चौहटन को संभालने का जिम्मा लिया लेकिन वृद्धावस्था एवं अस्वस्थता के कारण कर नहीं पाए। दीपावली से पूर्व अस्वस्थता के बावजूद संघ प्रमुख श्री के बाड़मेर प्रवास के दौरान उनके सानिध्य में रहे। 1957 का मेड़ता उच्च प्रशिक्षण शिविर उनका प्रथम शिविर था। नौकरी आदि की मजबूरी के कारण बीच में शिविर नहीं कर पाए। लेकिन 2003 के सिवाणा शिविर के बाद सक्रिय सहयोगी बने। संघ में उनकी निष्ठा एवं कर्मठता की कमी सदैव खलेगी।

मिर्जा राजा मानसिंह आमेर पर विचार गोष्ठी

श्री भवानी निकेतन शिक्षा समिति जयपुर द्वारा प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष 6 दिसम्बर को मिर्जा राजा मानसिंह आमेर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। दो सत्रों में आयोजित विचार गोष्ठी को प्रो. जसवंतसिंह, डॉ. श्रद्धा चौहान, डॉ. शाहिद अहमद, प्रो. ममता तंवर, इतिहासकार ईमामुद्दीन, डॉ. अस्मिता रत्नावत, प्रो. रहीस खान, डॉ. ए.एन. शर्मा, अर्चना कंवर, संपतसिंह धमोरा, रघुवीरसिंह खंगारोत, महेन्द्रसिंह जैसलान आदि ने मिर्जा राजा के बहुआयामी व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए उनकी शूरवीरता, रणकौशल, प्रशासनिक क्षमता, धार्मिक सहिष्णुता के बारे में बताया। साथ ही उनके द्वारा स्थापत्य कला, साहित्य आदि कलाओं में योगदान को पत्र वाचन द्वारा बताया गया। विचार गोष्ठी में शोधार्थी विद्यार्थियों द्वारा भी पत्रवाचन किए गए।

भावनगर में स्नेहमिलन

संघ के स्वयंसेवक केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्यमंत्री गजेन्द्रसिंह महरोली गुजरात चुनावों के सिलसिले में भावनगर प्रवास पर रहे। इस दौरान 4 दिसम्बर को सायं स्थानीय स्वयंसेवकों का एक स्नेहमिलन रखा गया जिसमें मंत्री महोदय ने स्वयं के जीवन की विशिष्टताओं का कारण संघ में मिले शिक्षण को दिया। उन्होंने कहा कि बचपन से ही संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवकों के सानिध्य में मिला शिक्षण जीवन के हर क्षेत्र में सहयोगी एवं मार्गदर्शक बनकर खड़ा रहता है। सभी के परिचय का कार्यक्रम रखा गया एवं स्नेहभोज का भी आयोजन हुआ।

नरपतसिंह तंवर बने महासचिव

जयपुर बार एसोसिएशन के चुनावों में विगत 11 दिसम्बर को नरपतसिंह तंवर महासचिव के पद पर अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी को 240 मतों से हकार निर्वाचित हुए। उपाध्यक्ष के पद अभिमन्यु सिंह राजावत निर्वाचित हुए वहीं गोविन्दसिंह चन्द्रावत कार्यकारिणी सदस्य चुने गए। उल्लेखनीय है कि जयपुर बार उत्तर भारत की सबसे बड़ी बार है जिसमें 10 हजार अधिवक्ता हैं। इस विजय में समाज के सभी अधिवक्ताओं ने सामूहिक प्रयास किया।

समाज नकार रहा है रूढ़ियों को

विगत लंबे समय से संघ के प्रयासों के परिणाम स्वरूप बने वातावरण का असर समाज में दृष्टिगोचर होने लगा है एवं अनेक जागरूक लोग प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से संघ के प्रयासों से प्रभावित हो विवाह में टीका प्रथा एवं दहेज की मांग करने की प्रवृत्ति को नकार रहे हैं। सावों के मौसम में हर क्षेत्र के समाचार पत्रों में इस प्रकार के समाचार छप रहे हैं जिसमें या तो वर पक्ष की ओर से टीका आदि के लिए पहले ही मना कर दिया गया है अथवा विवाह या सगाई के अवसर टीके आदि के रूप में दी गई भेंट को विनम्रता पूर्वक नकारा जा रहा है। संघ के दिवगंत स्वयंसेवक देवीसिंह गांवड़ी के पौत्र सॉफ्टवेयर इंजीनियर बृजराजसिंह के विवाह में उनके पिता गिरधारीसिंह ने अपने समधी शिववीरसिंह शेखावत द्वारा दी गई गाड़ी एवं 5 लाख रुपए को विनम्रतापूर्वक नकार दिया एवं विवाह में जुहारी भी नहीं ली। इसी प्रकार मोरिया (फलोदी) में माडवा व बडोड़ागांव से आई दो बारातों ने शगुन स्वरूप विवाह में एक रुपया ही स्वीकार किया। इसी प्रकार थांवला निवासी नंदसिंह नरुका ने अपने पुत्र के विवाह में केश व कार को छोड़कर मात्र एक रुपया शगुन स्वरूप लिया।

पाली जिले के रास के प्रहलादसिंह ने अपने विवाह में तीन लाख इक्वायन हजार का टीका अस्वीकार कर दिया। शिष्यु निवासी भंवरसिंह ने टीका आदि को नकारने के साथ-साथ गांव वालों से बान के रूप में मिली एक लाख रुपए की रकम थेलेसिमीया पीड़ित एक व्यक्ति को देकर मिशाल पेश की। इसी प्रकार सीकर के बड़ा गांव निवासी रणजीतसिंह ने अपने पुत्र के विवाह में केवल नारियल एवं भारत सरकार द्वारा दुर्गादास जी पर जारी सिक्का ही स्वीकार किया। एयरफोर्स में नौकरी कर रहे ओमसिंह अर्जुनपुरा ने टीके में मिले पांच लाख व कार स्वीकार नहीं की। दुजान (पाली) के नारायणसिंह राठौड़ ने अपने पुत्र को टीके के रूप में मिले 3 लाख 51 हजार रुपए लौटाए। इस प्रकार के समाचार नित्य प्रति समाचार पत्रों में पढ़े जा सकते हैं जो समाज में जागरण का संदेश देते है। ये सभी साधुवाद के पात्र है।

राव कूंपाजी की 515वीं जयंती मनाई

राठौड़ों की कूंपावत शाखा के प्रथम पुरुष एवं गिरी सुमेल के युद्ध में अपने अदम्य साहस व वीरता द्वारा शेरशाह के दांत खट्टे करने वाले राव कूंपा की 515वीं जयंती राणावास के गोविंद राजपूत छात्रावास में समारोहपूर्वक मनाई गई। संत समताराम जी, विक्रमसिंह चण्डावल, नारायणसिंह आकड़ावास, भंवरसिंह मंडली, कानसिंह उदेशी कुआं, दलपतसिंह गुड़ाकेशरसिंह, सुमेरसिंह कुंपावत, चक्रवर्तीसिंह आदि के आतिथ्य में मनाए गए समारोह में नवनिर्मित विद्यालय भवन का उद्घाटन किया गया जिसमें 15 कक्षा कक्ष, जलगृह, सभा भवन, कम्प्यूटर लैब आदि बनाए गए हैं। इस अवसर पर इस वर्ष आर.ए.एस. में चयनित समाज बंधुओं एवं अन्य प्रतिभाओं को सम्मानित किया गया। चयनित अधिकारियों ने उपस्थित विद्यार्थियों को प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी एवं रोजगार के अवसरों के संबंध में विस्तृत जानकारी उपलब्ध करवाई। साथ ही गुड़ा केशरसिंह (धनला) में भी गांव के युवाओं ने राव कूंपाजी की जयंती मनाई।

मालवा में संपर्क यात्रा

संघ के मेवाड़ मालवा संभाग के संभाग प्रमुख के नेतृत्व में मालवा प्रांत प्रमुख गोपालशरण सिंह सहाड़ा व सह प्रांत प्रमुख लक्ष्मण सिंह बड़ौली के दल ने 8 से 10 दिसंबर तक मालवा की संपर्क यात्रा की। यात्रा के दौरान बालिका शिविर रतलाम के आयोजक कृष्णेन्द्रसिंह सजावता एवं रतलाम राजपूत बोर्डिंग के सचिव जी.जी. सिंह आम्बा से मिलकर शीतकालीन अवकाश में प्रस्तावित बालिका शिविर की व्यवस्था एवं संख्या बाबत बातचीत की। वहां से जावरा पहुंच कर धर्मेन्द्रसिंह सिसोदिया से मिले व अयाना बालक शिविर बाबत चर्चा की। वहां संघ शक्ति पथप्रेरक के ग्राहक भी बनाए। वहां से अयाना पहुंचकर शिविर स्थल का अवलोकन किया एवं स्थानीय समाज बंधुओं से मिलकर व्यवस्था, संख्या आदि के बारे में चर्चा की। वहां से ताल व विक्रमगढ़ होते हुए नागखजूरी आए। फतेहगढ़ से महेन्द्रसिंह फतेहगढ़ व दयालसिंह सेंदरा भी नागखजूरी पहुंच कर इस दल में शामिल हुए। वहां आसपास के समाजबंधु एकत्र थे। उनमें संघ व शिविर बाबत जानकारी साझा की। स्थानीय समाज बंधुओं ने अब तक की तैयारियों से अवगत करवाया। शिविर स्थल भी देखा। वहां से दीपाखेड़ा होते हुए देवरिया विजय पहुंचे जहां आयोजित स्नेहमिलन में शामिल हो उपस्थित बंधुओं को संघ का परिचय दिया। वहां से महेन्द्रसिंह फतेहगढ़ व दयालसिंह सेंदरा अलग हो गए एवं शेष लोग चित्तौड़गढ़ आ गए। उल्लेखनीय है कि 24 से 27 दिसम्बर तक नाग खजूरी में व 27 से 30 दिसम्बर तक अयाना में बालकों का प्रा.प्र.शि. होना है तथा 25 से 28 दिसम्बर तक रतलाम में बालिका शिविर होना है।

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com , Web site:- www.shrikys.org